Dr•Navin Chandra Sharma
Assistant Professor
Dept of psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara

Date; 13/02/2026

Class: P.G Semester - 4th

Clinical Psychology,

Topic :-

Behavioural Model or learning Theory model

मानव व्यवहार तथा उसके उपचार में जन मनोविश्लेषण द्वारा प्रदत नियमों एवं सिद्धान्त काफी प्रभावी था उसी समय व्यवहार बार ने मनोविश्लेषण की श्रेष्ठता को चुनौती दी। इनके अनुसार स्वतंत्र्य (freeanociation) तथा स्वप्न विशलेषण (dream analysis) के माध्यम से सीतियों के आत्यनिष्ठ अनुभूतियों के अध्ययन करने पर कोई स्वीकार्य वैज्ञानिक आँकड़े नहीं मिलती है जिस कारण उसका सत्यापन अन्य मनोवैज्ञानिकों द्वारा नहीं किया जा सकता। व्यवहारवादी दृष्टिकोण में सिर्फ प्रत्यक्ष रूप से प्रेक्षणीय व्यवहार (observable behaviour) तथा उरी (Simulus) तथा पुनर्वसन (reinforcement) जी एन व्यवहार को नियमित करते हैं, के रूप में मानव व्यवहार की व्याख्या उत्तम ढंग से की जा सकती है।

व्यवहरात्मक मॉडल अध्ययन करने वाले व्यवहार तथा उसका पर्यावरणीय एवं व्यक्तिगत अवस्थाओं जो उसे प्रभावित करता है, के संबंध पर अधिक बल डालता है। इस मॉडल की मुख्य मान्यता यह है कि मानव व्यवहार सीखना अधिगम (learning) द्वारा प्रभावित होता है जो एक विशेष सामाजिक परिपेक्ष्य (Social context) में होता है। इसीलिए इस मॉडल को सीखना या अधिकगम सिद्धान्त पौडल (Learning Theory model) भी कहा जाता है।

व्यवहारात्मक मॉडल में वैयक्तिक भिन्नता (individual difference) तथा लोगों के समानता (similarity) की व्याख्या विशेष ढंग से की जाती है। वैयक्तिक भिन्नता की व्याख्या शीलगुण, व्यक्तित्व विशेषताओं तथा मानसिक रोगों के रूप में करके व्यक्ति के सीखने के अपूर्व अनुभूतियों (unique experience) के रूप में की जाती है। व्यक्ति को किसी विशेष परिस्थिति में पहले किस तरह को अनुभूति हुआ है, इस पर यह निर्भर करता है कि वह उसी तरह की परिस्थिति में इसबार कैसा व्यवहार करेगा।

जहाँ तक व्यक्ति के व्यवहार में समानता (similarity) का प्रश्न है, एक ही संस्कृति में अधिकतर लोगों द्वारा स्वीकार किये गये नियमों, मूल्यों एवं सीखने के इतिहास के रूप में इसकी व्याख्या होती है। व्यवहारात्मक मॉडल में उक्त नियम द्वारा व्यक्तियों के वीच संगतता (consistency) तथा असंगतता (in-consistency) की भी व्याख्या की जाती है। व्यवहारात्मक मॉडल में व्यवहारात्मक संगतता (behavioural Comisteney) का कारण सामान्यीकृत सीखना (generalized learning) तथा/या उद्दीपक समानता (Stimulus similarity) होती है तथा व्यवहारात्मक असंगतता (behaviour inconsistency) का कारण व्यवहारात्मक विशिष्टता (behavioral specificity) बतलाया है।

व्यवहारात्मक मॉडल के तीन प्रमुख रूपान्तर (versions) क्रिया प्रसूत सीखना (operant learning), प्रतिवादी सीखना (respondent learning) तथा सामाजिक सीखना (Social learning) या संज्ञानात्मक व्यवहारपरक सीखना (Cognitive behavioural learning) है। इनतीनों की अलग-अलग व्याख्या के पूर्व इनकी सामान्य विशेषताएँ क्या है, पर प्रकाश डालना आवश्यक है जो निम्न हैं-

(1) व्यवहारात्मक मॉडल में व्यवहार के निर्धारण में पर्यावरणी कारकों पर वंशनुगत याजैविक कारकों की अपेक्षा अधि क बल डाला जाता है। वंशानुगत या जैविक कारकों द्वारा व्यक्ति के व्यवहारात्मक या वौद्धिक अन्तःशक्ति (insellesual potential) के विकास की सीमा का निर्धारण होता है और इस सीमा के भीतर सीखना के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार का निर्धारण होता है।

(2) व्यवहारात्मक मॉडल में सिर्फ वही व्यवहार चाहे वह स्पष्ट (overt) हो या अस्पष्ट (covert) हो, यदि वे भापनीय हों तो उसे अध्ययन में शामिल किया जाता है। इस तरह केवल भापनीय व्यवहार (measurable behavior) ही नैदान्वि मनोविज्ञान का विषय वस्तु हो सकता है।

(3) मानव व्यवहार के बारे में जानने के लिए तथा उसके वारे में मूल्यांकन (assessment) करने के लिए आनुभविक श (empirical research) की विधियों को अपनाया जाता है। इसके शोधों में स्वतंभ चरों (जैसे उपचार की प्रविधियों) में जोड़त करके विशेष रूप से परिभाषित आक्षित चर (dependent variable) जैसे यंदित व्यवहार (depreredbehavian) लैंगिक उत्ते (sexual excitement), मदिरा पान आदि पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

(4) व्यवहारात्मक मॉडल में नैदानिक मूल्यांकन तथा उपचार एक दूसरे से संगठित (musegrid) होते हैं। समस्यात्मक व्यवहार एवं असमस्यात्मक व्यवहार का निर्धारण एक ही तरह के नियमों (principle) द्वारा होता है, इसलिए नैदा मूल्यांकन आधार पर यह पता लगाया जा सकता है कि रोगी की वर्त्तमान समस्या को कैसे सीखा गया है और उनका किस से संपोषण हो रहा है ताकि उसे अधिक समायोजी (adaptive) तथा वैयकृिक रूप से सिखला कर उसके व्यवहार को उन्नत ब जा सके ।

(5) व्यवहारात्मक मॉडल में नैदानिक मूल्यांकन (clinical assessment) तथा उपचार (treatment) दोनों के कोई निर्णय आनुभाबिक शोधों (empirical research) के परिणाम के आधार पर ही लिए जाते हैं।